5070

ओ३म्

भागवतपरीक्षा।

जिसे

परीक्षितगढ़ निवासी एक आर्य ने रचा

और

तुलसीराम स्वामी सम्पादक वेदप्रकाश और

सामवेदभाष्यकार ने अपने

स्वामियन्त्रालय-मेरठ में

भवानीलाल भारती

मुद्रित किया

द्वितीय वार १५०० संवत् १९५७ भाद्रपद मूल्य)॥

ओ३म्

श्रीमद्भागवत परीक्षा

और

शुकदेवस्वर्गारोहण

विदित हो कि आज कल श्रीमद्भागवत को सभी पौराणिक महापुराण कह कर महामान्य समझते हैं यह भी प्रसिद्ध है कि " विद्यावतां भागवते परीक्षा " विद्वानों की भागवत में परीक्षा है। इस का अर्थ ह यह समझते हैं कि जिसने भागवत को बाजीगर के सा खेल जान लिया वही विद्वान् है। अन्यथा अधकचरे विद्वान् तो भागवत की माया में आ ही जाते हैं, इस में सन्देह भी नहीं है। पढ़े लिखे बड़े २ काशी के पं० भी उसी में फंसे पड़े हैं, फिर अन्य की तो क्या गति है जो निकलें, बस यही परीक्षा है। अब पौराणिक मनुष्य यह मनता क-रते हैं कि भागवत सब से प्रथम श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित को गङ्गा तट पर जाकर सुनाई थी और सात दिन जब सुना चुके तब राजा की मृत्यु हुई और स्वर्ग को गया॥

यही कथा भागवत के प्रथम स्कन्ध में भी पाई जाती है परन्तु महाभारत में इस के विरुद्ध लिखा है। आदि-पर्वान्तर्गत आस्तीक पर्व में इस

४० में कृश नामक बालक ने शमीक के पुत्र शृङ्गी को यह समाचार सुनाया कि–

तेजस्विनस्तव पिता तथैव च तपास्वनः ।
शवं स्कन्धे निवहति मा शृङ्गिन् गर्वितो भवा॥३०॥
व्याहरन्नृषिपुत्रेषु मा स्म किंचिदचो वद ॥
अस्मद्विधेषु सिद्धेषु ब्रह्मवित्सु तपस्विषु ॥३१॥
क्व ते पुरुषमानित्वं क्व वाचस्तथा विधाः ॥

संक्षेप से अर्थ– तपस्वी तेरे पिता के मुर्दे सर्प को गले (कंधे) पर धारण किया है, यहां गर्व की बात मत करो। हम ऋषिपुत्रों में बात करते हुवों से कुछ मत बोलो। तेरी वह बात और पुरुषमानीपन कहां गया? ऐसे वचन सुनते ही उसे क्रोध आया और ४१ वें अध्याय में उस ने शाप दिया कि जिसने मेरे पिता के गले में सर्प डाला है उसे सातवें दिन तक्षक सर्प खा जायगा। और पिता के पास आकर कहा कि आप के गले में जिसने सर्प मेरा है मुझे उस पर क्रोध आया और शाप दिया है कि आज से सप्तम दिन सर्प काटे और वह मर जावे। यह सुन दयामय शमीक महार्षि ने कहा कि हे पुत्र! तुम ने यह अच्छा नहीं किया। और ४२ वें अध्याय में शमीक ने

अपने शिष्य गौरमुख को राजा परीक्षित के पास भेजा कि उसे ख़बर कर दो, तब गौरमुख ने जाकर ख़बर दी कि हे राजन् ! ऋषिपुत्र ने आप को शाप दे दिया है, मुझे आप को ख़बरदार करने के लिये गुरुजी ने भेजा है ।।

राजा को यह बात सुन, अपना पाप जान, बड़ा दुःख हुवा और गौरमुख ऋषिशिष्य से कहा कि जाइये महाराज को प्रसन्न कीजिये और इधर मन्त्रियों से सलाह करने लगा, यहां तक तो भागवत में भी यही वर्णन है फिर आगे भागवत में तो कहा है कि राजकार्य्य को त्याग राजा गङ्गातट पर चले गये और सात दिन तक भागवत सुनी । परन्तु भारत के बीच में आदि पर्व अ० ४२ में तो यही लिखा है कि–

सम्मन्त्र्य मन्त्रभिश्चैव स तथा मन्त्रतत्त्ववित् ।
प्रासादं कारयामास एकस्तम्भं सुरक्षितम् ॥२९॥
रक्षां च विदधे तत्र भिषजश्चौषधानि च ।
ब्राह्मणान्मन्त्रसिद्धांश्च सर्वतो वैन्ययोजयत्॥३०।
राजकार्याणि तत्रस्थः सर्वाण्येवाकरोच्च सः ।
मन्त्रिभिस्सह धर्मज्ञस्समन्तात्परिरक्षितः ॥३१॥
न चैनं कश्चिदारूढं लभते राजसत्तमम् ।

वातोपि निश्चरंस्तत्र प्रवेशे विनिवार्यते ॥३२॥
प्राप्ते च दिवसे तस्मिन् सप्तमे द्विजसप्तमः।

भावार्थ—मन्त्रियों से सलाह करके एक स्तम्भ वाला बड़ा रक्षित ऊंचा महल बनवाया, वहां वैद्य और दवाई सेरक्षा रक्खी। मन्त्रविद् सिद्ध ब्राह्मण चारों ओर नियुक्तकिये॥३०॥ वह वहीं राजकाज सब करता था । मन्त्री जिस का पहरा देते थे । कोई भी उसे वहां ऊंचे पर बैठे को नहीं छू सकता था, वहां वायु भी छन २ कर जाता था॥३२॥

जब सातवां दिन आया, तब अध्याय ४३ में लिखा है कि सर्प ब्राह्मण तपस्वियों का रूप बनाकर आये सायंकाल होगया था, आशीर्वाद पढ़ कर कुशा और फल देगये फलों ही में सूक्ष्म रूप धर के तक्षक भी आया । राजाने मन्त्रियों से कहा कि सातवां दिन भी बीता, लो फल खाओ। मन्त्रियों को कुछ फल देकर आप भी एक फल खाने को तैयार हुए कि फल में छोटा सा लाल नेत्र का जन्तु जान पड़ा, तब राजा ने कहा कि यह कीड़ा ही काट लेगा, जिससे ब्राह्मण का वाक्य झूंठा भी न हो ॥

अ० ४४ में लिखा है कि जब तक्षक ने फंकार मारी, उस समय—

ततस्तु ते तं गृहमग्निनावृतं प्रदीप्यमानं

विषजेन भोगिनः । भयात्परित्यज्य दिशः प्रपेदिरे पपात राजाऽशनिताडितो यथा ॥४॥

भावार्थ—इस ज़हरी सर्प के फुंकार की अग्नि से जलते हुवे स्थान को छोड़ कर, मन्त्री चारों दिशाओं को भाग गये, और राजा बिजुली केसा मारा नीचे गिर पड़ा। इस में भागवत सुनना और राज्य का न छोड़ना, गङ्गा तट पर जाना, कुछ भी नहीं लिखा। इतिहासों में इससे बड़ा पुस्तक कोई है ही नहीं। इस लिये हम को तो यही निश्चय है कि भागवत शुकदेव जी ने राजा परीक्षित को नहीं सुनाई ॥

महाभारत ही के शान्तिपर्व के अ० ३२३ में यह भी लिखा है कि भीष्म जी शरशय्या पर पड़े युधिष्ठर से वर्णन करते हैं कि शुकदेव का जन्म और अन्त भी मैं तुझे सुनाता हूं।

और अ०३३१ में भी लिखा है कि नारद जी से ज्ञान सुनकर शुकदेव मुनि संसार से विमुख होगये और अपने पिता व्यास जी के पास गये और नमस्कार अभिवादन करके सब वृत्त कह सुनाया और आज्ञा मांगी—

श्रुत्वा ऋषिस्तद्वचनं शुकस्य, प्रीतो महात्मा पुनराह चैनम्। भो भोः पुत्र स्थीयतां तावदद्य, यावच्चक्षुः प्रीणयामि त्वदर्थम् ॥६२॥

भावार्थ—शुकदेव जी के अभिवादन और संसार की असारता तत्वज्ञान को सुन कर व्यास जी प्रसन्न हुए और जब यह जाना कि यही देहत्यागार्थ जाता है तो हे पुत्र ! हे पुत्र ! भो भोः पुत्र ! रे रे पुत्र ॥ तब तक ठहर, जब तक मेरे नेत्र तुझे देखें । अर्थात् जब तक मैं जीता हूं, तब तक ठहर ।

निरपेक्षः शुको भूत्वा निःस्नेहो मुक्तसंशयः ।
मोक्षमेवानुसंचिन्त्य गमनाय मनो दधे ॥६३॥
पितरञ्च परित्यज्य जगाम मुनिसत्तमः ।
कैलासपृष्ठं विमलं सिद्धसङ्घनिषेवितम् ॥६४॥

अर्थ—शुकदेव ने स्नेह छोड़, निरपेक्ष हो, मोक्ष ही की रुचि कर, चलने की ठानी ॥६३॥ पिता को छोड़, कैलास के ऊपर चले गये ॥६४॥ इति ३३१ अध्यायः ॥

आगे अध्याय ३३२ में श्लोक—

कैलासपृष्ठादुत्पत्य स पपात दिवं तदा ।
अन्तरिक्षचरःश्रीमान् वायुभूतःसुनिश्चितः॥१०॥

अर्थ—कैलास के ऊपर से उठ कर वायुरूप शुकदेव आकाश में होकर दिव्यलोक (स्वर्ग) में पहुंचे ॥

अब अ० ३३३ में लिखा है कि जब शुकस्वर्गारोहण

व्यास जी ने सुना तो बड़ा भारी दुःख माना, जैसा कि-

ततः शुकेति दीर्घेण शब्देनाक्रन्दितस्तथा ।
स्वयं पिता स्वरेणोच्चैस्त्रींल्लोकाननुनादयन् ॥२२

भावार्थ-तब हे शुक ! ऐसा उच्चस्वर से रोते व्यास तीन लोकको रुलाते भये ।।२२।। आगे पुत्रशोक में मन्दा किनी नदी पर आये और वहां महादेव जी ने समझाये

तमुवाच महादेवः शान्तिपूर्वमिदं वचः ।
पुत्रशोकाभिसन्तप्तं कृष्णद्वैपायनं तदा ॥३२।

महादेव शान्तिपूर्वक उस पुत्रशोक से दुःखी व्यास जी से यह वचन बोले कि:-

अग्नेर्भूमेरपां वायोरन्तरिक्षस्य चैव ह ।
वीर्येण सदृशः पुत्रः पुरा मत्तस्त्वया वृतः॥३३।

अर्थ-अग्नि, पृथिवी, जल, वायु और आकाश समान बलधारी पुत्र तुम ने मुझ से वरा था ।।३३॥

स तथालक्षणो जातस्तपसा तव सम्भृतः ।
मम चैव प्रसादेन ब्रह्मतेजोमयः शुचिः ॥३४।
स गतिं परमां प्राप्तो दुष्प्राप्यामजितेन्द्रियैः ।
दैवतैरपि विप्रर्षे तं त्वं किमनुशोचसि ॥३५॥

(जैसा कि वरा था) वह वैसे वक्षणयुक्त ही शुक तेरे तप और मेरी कृपा से शुद्ध वेद का तेजधारी हुआ ॥३४॥ वह उस परमगति को प्राप्त हो गया जो (गति) अजितेन्द्रियों को नहीं मिलती। और वेदतत्वविदों को भी नहीं मिलती, इसलिये उस का तू क्यों शोच करता है ॥३५॥ इत्यादि आगेभी फिर भीष्मजी राजा युधिष्ठिर से कहतेहैंकि

इति जन्म गतिश्चैव शुकस्य भरतर्षभ !
विस्तरेण समाख्याता यन्मां त्वं परिपृच्छसि॥३९॥

हे भरतकुलश्रेष्ठ ! यह शुकदेव की जन्म से मृत्यु तक की गति विस्तार से सुनाई जो तू मुझ से बूझता है॥३९॥

पाठकगण ! भला अब भी इस में कोई सन्देह रहगया कि जब परीक्षित के दादा धर्मयुधिष्ठिर को उस के भी दादा श्रीभीष्म जी महात्मा सत्यवादी शुकदेव जी की मृत्यु का वृत्तान्त सुना चुके तो फिर भी वही व्यासपुत्र शुकदेव परीक्षित को कैसे भागवत सुनाने के लिये आये थे। और इसी भारत के अ० १ में लिखा है कि व्यास जी ने साठ लाख भारत रचा है, जिस में स्वर्गलोक में तीस लक्ष भेजा, जिसे नारद जी सुनाते हैं। और पितृलोक में पन्द्रह लक्ष भेजा, जो असित देवल जी सुनाते हैं। १४ लक्ष गन्धर्वों को शुकदेव जी सनाते हैं। बाकी एक

लक्ष पृथ्वी पर है जो सूत जी को वैशंपायन सुनाते हैं॥

जब शुकदेव जी को गन्धर्वों के लोक में भारत सुनाने को व्यासजी ने ही भेजा है तो परीक्षित को सुनाने कैसे आगये ? जैसा कि महा० भा० आदि प० अ० १ में लिखा है—

इदं द्वैपायनः पूर्वं पुत्रमध्यापयच्छुकम्।
ततोन्येभ्योनुरूपेभ्यः शिष्येभ्यः प्रददौ विभुः॥
षष्टिं शतसहस्राणि चकारान्यां स संहिताम्।
त्रिंशच्छतसहस्रं च देवलोके प्रतिष्ठितम्॥१०४॥
पित्र्ये पञ्चदश प्रोक्तं गन्धर्वेषु चतुर्दश।
एकं शतसहस्रं तु मानुषे तु प्रतिष्ठितम्॥१०५॥
नारदोऽश्रावयद्देवानऽसितो देवलः पितॄन्।
गन्धर्वयक्षरक्षांसि श्रावयामास वै शुकः॥१०६॥
अस्मिंस्तु मानुषे लोके वैशम्पायन उक्तवान्।
शिष्यो व्यासस्य धर्मात्मा सर्ववेदविदांवरः॥
एकं शतसहस्रं तु मयोक्तं वै निबोधत॥१०७॥

देवीभागवत में भी शुकदेवजी का गृहस्थी होना और चार पुत्र होने अन्त में स्वर्ग पधारना, स्पष्ट ही लिखा है जैसाकि-

देवी भागवत १८११ शाके वेङ्कटेश्वर प्रेस मुम्बई। प्रथमस्कन्ध अ० १९ पृ० ३८ पं० ४ से आगे श्लो० ३६ श्री शुकदेव जी विवाह को मना करते थे, व्यास जी कहतेथे कि "अपुत्रस्य गतिर्नास्ति" इत्यादि कह कर राजा जनक के पास गये हैं, व्यास जी के भेजे वहां जनक को गृही ज्ञानी देख बात चीत करके, यह कथा पूर्व के अध्यायों में सविस्तर कह कर श्लो० ३६ से—

तच्छ्रुत्वा तस्य वचनं शुकः प्रीतमनाभवत् ॥
आपृच्छ्य तं जगामाशु व्यासस्याश्रममुत्तमम्॥३६॥
आगच्छन्तं सुतं दृष्ट्वा व्यासोपि सुखमाप्तवान्॥
आलिङ्ग्याघ्राय मूर्धानं पप्रच्छ कुशलं पुनः॥३७॥
स्थितस्तत्राश्रमे रम्ये पितुः पार्श्वे समाहितः॥
वेदाध्ययनसंपन्नः सर्वशास्त्रविशारदः॥३८॥
जनकस्य दशां दृष्ट्वा राज्यस्थस्य महात्मनः॥
स निर्वृतिं परां प्राप्य पितुराश्रमसंस्थितः॥३९॥
पितॄणां सुभगा कन्या पीवरी नाम सुन्दरी॥
शुकश्चकार पत्नीं तां योगमार्गस्थितोपि हि॥४०॥
स तस्यां जनयामास पुत्रांश्चतुर एव हि॥

कृष्णं गौरप्रभं चैव भूरिं देवश्रुतं तथा ॥४१॥
कन्यां कीर्त्तिं समुत्पाद्य व्यासपुत्रः प्रतापवान्।
ददौ विभ्राजपुत्राय त्वणुहाय महात्मने ॥४२॥
अणुहस्य सुतः श्रीमान् ब्रह्मदत्तः प्रतापवान् ।
ब्रह्मज्ञः पृथिवीपालः शुककन्यासमुद्भवः ॥४३॥
कालेन कियता तत्र नारदस्योपदेशतः ॥
ज्ञानं परमकं प्राप्य योगमार्गमनुत्तमम् ॥४४॥
पुत्रे राज्यं निधायाथ गतो बदरिकाश्रमम् ॥
मायाबीजोपदेशेन तस्य ज्ञानं निरर्गलम् ॥४५॥
नारदस्य प्रसादेन जातं सद्यो विमुक्तिदम् ॥
कैलासशिखरे रम्ये त्यक्त्वा संगं पितुः शुकः॥४६॥
ध्यानमास्थाय विपुलं स्थितस्संगपराङ्मुखः ।
उत्पपात गिरेः शृङ्गात् सिद्धिं च परमां गतः॥४७॥
आकाशगो महातेजा विरराज यथा रविः ॥
गिरेःशृङ्गं द्विधा जातं शुकस्योत्पतने तदा॥४८॥
उत्पाता बहवो जाताः शुकश्चाकाशगोऽभवत् ॥

अन्तरिक्षं तथा वायुःस्तूयमानः सुरर्षिभिः॥४९॥
तेजसातिविराजन्वै द्वितीय इव भास्करः ॥
व्यासस्तु विरहाक्रान्तःक्रन्दन्पुत्रेति चासकृत्।५०।
गिरेः शृङ्गे ततस्तत्र शुको यत्र स्थितोऽभवत् ॥
क्रन्दमानं तदा दीनं व्यासं मत्वा श्रमाकूलम्।५१।
सर्वभूतगतः साक्षी प्रतिशब्दमदात्तदा ॥
तत्राद्यापि गिरेः शृङ्गे प्रतिशब्दः स्फुटोऽभवत् ५२
रुदन्तं तं समालक्ष्य व्यासं शोकसमन्वितम् ॥
पुत्र पुत्रेति भाषन्तं विरहेण परिप्लुतम् ॥५३॥
शिवस्तत्र समागत्य पाराशर्यमबोधयत् ॥
व्यास शोकं मा कुरु त्वं पुत्रस्ते योगवित्तमः॥५४॥
परमां गतिमापन्नो दुर्लभां चाकृतात्मभिः ॥
तस्य शोको न कर्त्तव्यस्त्वया शोकं विजानता।५५
कीर्त्तिस्ते विपुला जाता तेन पुत्रेण चानघ ॥

व्यास उवाच

न शोको यातिदेवेशकिं करोमि जगत्पते ॥५६॥

अर्थ—उस जनक के वचन को सुन कर शुकदेव जी बड़े

प्रसन्नमन हुए। और जनक की आज्ञा लेकर अपने पिता व्यास के स्थान को आये ॥ ३६ ॥

आते हुए पुत्र को देखकर व्यास जी भी सुखी हुए। पुचकार कर हृदय से लगा कर फिर कुशल बूझी ॥३७॥

उस रम्य आश्रम में पिता के पास एकाग्रचित्त हो, शास्त्रचतुर शुकदेव वेदपाठ करते रहे ॥३८॥

राजा जनक के गृहस्थी होने पर भी योगिदशा को देख कर पिता के आश्रम में वह शुकदेव निर्वृति को प्राप्त हुए ॥३९॥

(अर्थात् गृहस्थी हो कर भी योगवृत्ति धार सकूंगा जैसे जनक की वृत्ति देखी थी इस लिये विवाह में कुछ डर नहीं, यह सोच कर)

पीवरी नाम की पितरों की सुन्दर कन्या को योग-मार्ग में रहते भी शुकदेव जी पत्नी करते भये ॥ ४०॥

उन शुकदेव जी ने उस में से चार ही पुत्र उत्पन्न किये १ कृष्ण २ गौरसुख ३ भूरि तथा ४ देवश्रुत ॥ ४१ ॥

और शुकदेव जी ने कीर्त्ति नाम की कन्या को भी उत्पन्न करके विभ्राज के पुत्र महात्मा अणुह को दान की ॥४२

अणुह का पुत्र ब्रह्मदत्त तेजस्वी बड़ा ब्रह्मज्ञ पृथिवीपालक शुकदेव की कन्या से उत्पन्न हुवा ॥४३॥

कुछ समय के अनन्तर नारद के उपदेश से परमज्ञान

को और उत्तम योगमार्ग को पाकर ।। ४४ ।।

पुत्र को राज्य देकर अगुह जी बदरिकाश्रम को चले गये, मायाबीज के उपदेश से उस अगुह को ज्ञान हो गया ।।

रम्य कैलास के शिखर पर पिताके संग को छोड़ कर नारद की कृपा से शीघ्र मुक्तिदायक मार्ग प्राप्त हुवा, शुकदेव संग से मुख मोड़, विपुल ध्यान में बैठ, पर्वत के शिखर से उठ कर परम धाम को प्राप्त हुवे ।। ४५ । ४६ । ४७ ।।

महातेज धारण कर आकाश में जाते सूर्यवत् शोभा को प्राप्त हुवे, जब शुकदेव जी की ऊर्ध्वगति हुई तब पर्वत के दो खण्ड हो गये ।। ४८ ।।

बहुत से उत्पात हुए और शुकदेव आकाशगामी हुवे । आकाश तथा वायु ऋषियों से स्तुति किये गये। तेज से शोभित दूसरे सूर्य के समान हुवे ।। ४९ ।।

और व्यास जी विरह से व्याकुल हकराते, रोते बार२ हे पुत्र! पुत्र! ऐसा जहां शुक रहते थे वहां कहते फिरे ।।५०।।

तब दीन दुःखी रोते रोते थके हुवे व्यास को जान कर ।५१।

प्राणिमात्र में स्थित परमात्मा ने यह जवाब दिया । वहां अब भी पर्वत की चोटी पर गुंजार मालूम होता है।।

(पुत्र पुत्र ऐसे विरह में भरे उस रोते हुवे व्यास को शोकसमुद्र में देख कर)

वहां शिव ने आ कर पाराशर पुत्र व्यास को समझाया कि हे व्यास ? शोक मत करै, तेरा पुत्र योगज्ञाता परमगति को जो अपुनरात्मों को दुर्लभ है, प्राप्त हुवा है। हे शोक के जानकार व्यास ? तुझे उस का शोक नहीं करना चाहिये ॥ ५५ ॥

हे निष्पाप ! तेरी कीर्त्ति उस पुत्र से विपुल हो गई। व्यास जी कहते हैं कि हे देवेश ! जगत्पते ? क्या करूं, शोक जाता ही नहीं ॥ ५६ ॥

जिस से यह भी ज्ञात होता है कि भागवत में जो यह लिखा है कि शुकदेव जी से पर्दा स्त्रियों ने इसलिये नहीं किया कि शुकदेव जी स्त्री पुरुष भाव को तो जानते ही नहीं थे, परन्तु देवीभा० में इस के सन्तान होना भी लिखा है। और पीवरी इन की स्त्री भी होनी लिखी है। जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं। अब पुस्तक बढ़ने के भय से हम अधिक नहीं लिखते। देवीभागवत की भूमिका बम्बई की छपी में बहुत से प्रमाण अन्य पुराणों के घर के सिद्ध भी किया है कि दे०भा० ही १८ पुराणों में मानी है। श्रीमद्भागवत नहीं, जिसे हम फिर लिखेंगे। ओं शान्ति :

आर्य समाज कड़ैल परिग्रहण क्रमांक ... ६३२
ज़िला-अजमेर आर्य महिला महाविद्यालय

ओ३म्

भागवतविचार

जिस को २० ग्रन्थों के ७९ प्रमाणों से सङ्कलित कर

परीक्षितगढ़ ज़िला मेरठ निवासी

एक आर्य ने रचा

और

पं० तुलसीराम स्वामी सामवेदभाष्यकार
तथा संपादक वेदप्रकाश मेरठ ने अपने

स्वामि-मेशीन-यन्त्रालय मेरठ में
छापा और प्रकाशित किया

संवत् १९६७ श्रावण

तृतीयवार २५००]　　[मूल्य -) आना

भवानीलाल भारतीय
तिथि ... १५ ...
आर्य समाज कड़ैल

इस पुस्तक में जिन पुस्तकों के प्रमाण हैं उन के नाम—

५	मत्स्य	१	कालिकापुराण
१८	देवीभागवत	१	मार्कण्डेयपुराण
२१	विष्णुभागवत	२	स्कन्दपुराण
१	मुद्गलपुराण	१	दुर्गातरङ्गिणी
१	कूर्मपुराण	१	दुर्गाप्रदीप
१	गरुडपुराण	१	दानप्रस्ताव
१	दर्शनपरक	१	विष्णुभागवत माहात्म्य
५	पद्मपुराण	१	देवीयामलतन्त्र
१२	शिवपुराण	३	संहारभैरवतन्त्र
१	आदित्यपुराण	१	अमरकोष

देवीभागवत के टीकाकार ने दानप्रस्ताव में नीचे लिखे ग्रन्थों के प्रमाण नाममात्र दिये हैं, श्लोक नहीं लिखे ॥

नारद, ब्रह्मवैवर्त्त, नागोजीभट्ट...

३५८१
विषय ... वे० पु० ३५
दिनांक ....

ओ३म्

भागवतविचार की भूमिका

विदित हो कि जब कहीं पौराणिकों से शास्त्रार्थ होने की बात चलती है, तब वह अपने मान्य पुस्तकों में १८ पुराण लिखाते हैं वा बताते हैं। परन्तु उन १८ के नाम कोई नहीं बता सकता क्योंकि प्रथम तो भागवत ही दो हैं, एक पुराणों में, दूसरा उपपुराणों में। कोई भी निश्चय नहीं कर सकता कि कौन पुराण और कौन उपपुराण है। हमने इस पुस्तक में यही वर्णन विशेषकर किया है और उस में पुराणादि के ही ८४ प्रमाण दिये हैं। भला जहां ऐसी पोल है, वे शास्त्रार्थ कैसे कर सकते हैं? जब शास्त्रार्थ की चर्चा चले, इस पुस्तक को बांट दो कि संख्या तो बताओ, फिर उस का प्रतिपाद्य विषय प्रमाणकोटि में समझा जायगा वा नहीं, इस का विचार किया जायगा। हम शास्त्रार्थ के समय बांटने में अति स्वल्प मूल्य लेकर यह पुस्तक देंगे, यह भी ध्यान रहे॥

सम्पादक

ओ३म्

भागवत-विचार

संसारस्थ सभ्यों का सदा यही अभिलाष रहता है कि किस प्रकार हम को सन्मार्ग मिले। इसी चक्र में जब हम विचार करते हैं तो चारों ओर दृष्टिपात करने से जिधर देखो उधर ही से यही आवाज़ आती है कि आओ हम मुक्ति के मार्ग को दिखावेंगे। ईसाई मुसलमान ही नहीं बल्कि जैन बौद्ध नानकशाही दादूपन्थी कबीर पन्थी पानपदासी उदासी चरणदासी अनेक पन्थाई अपने २ पन्थ को ठीक और दूसरे को बेठीक समझते समझाते हैं। इन सब का व्याख्यान किसी अन्य लेख में लिखेंगे परन्तु आज हम केवल पौराणिकों के ही मन्तव्य भागवत पर कुछ क़लम उठाते हैं। सज्जन लोग इस को आद्योपान्त पढ़ कर विचार करेंगे कि कौन भागवत इन में पुराण है और कौन उपपुराण। सब से बड़ा प्रश्न यही है कि अठारह पुराणों में विष्णुभागवत है वा देवीभागवत? इस बात की हम पुराणों ही से विवेचना करते हैं कि उन की इस विषय में क्या संमति है?

देवीभागवत के टीकाकार रङ्गभट्टसुत नीलकण्ठ अपने अभिनव तिलक में सब से प्रथम स्तुति के उपरान्त यही प्रश्न उपस्थित करते हैं कि पुराणों में भागवत दो प्रसिद्ध हैं, एक पुराणों में दूसरा उपपुराणों में। तो विवाद यह है कि कोई यह मानते हैं कि देवीभागवत ही महापुराण है। कोई विष्णुभागवत को महापुराण कहते हैं। दूसरे २ को उपपुराण कहते हैं। और कोई ऐसा मानते हैं कि विष्णुभागवत ही महापुराण है, देवीभागवत तो निर्मूल ही है। दूसरे यह कहते हैं कि देवीभागवत ही महापुराण है, विष्णुभागवत बोपदेवकृत है। अब वैष्णव भागवत को सुनियेः—

श्रीमद्भागवत १२ स्कन्ध अ० १३ श्लो० ४ से ९ तक

ब्राह्मं दशसहस्राणि, पाद्मं पञ्चोनषष्टि च।
श्रीवैष्णवं त्रयोविंशच्चतुर्विंशति शैवकम् ॥४॥
दशाष्टौ श्रीभागवतं नारदं पञ्चविंशतिः।
मार्कण्डेयंनव(अग्नि)वाह्नन्तुदशपञ्चचतुःशतम्
चतुर्दश भविष्यं स्यात्तथा पञ्च शतानि च।
दशाष्टौ ब्रह्मवैवर्त्तं लिङ्गमेकादशैव तु ॥ ६ ॥

चतुर्विंशतिवाराहमेकाशीतिसहस्रकम् ।
स्कन्दं शतं तथा चैकं वामनं दश कीर्त्तितम्॥७॥
कौर्मं सप्तदशाख्यातं मात्स्यं तत्तु चतुर्दश ।
एकोनविंशत्सौपर्णं ब्रह्माण्डं द्वादशैव तु ॥८॥
एवं पुराणसंदोहश्चतुर्लक्ष उदाहृतः ।
तत्राष्टादशसाहस्रं श्रीभागवतमिष्यते ॥९॥

श्रीमद्भागवत का अर्थ

१००१० ब्रह्म १	११००० लिङ्ग ११
१५००० पद्म २	२४००० वाराह १२
३१००० विष्णु ३	८११०० स्कन्द १३
४००० शिव ४	१०००० वामन १४
१८००० भागवत ५	१७००० कूर्म १५
५००० नारद ६	१४००० मत्स्य १६
९००० मार्कण्डेय ७	१९००० गरुड़ १७
१५४०० अग्नि ८	१२००० ब्रह्माण्ड १८
१४५१० भविष्य ९	———
१८००० ब्रह्मवैवर्त्त १०	४००००० योग

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम् ।
अनापलिङ्गकूस्कानि पुराणानि पृथक् पृथक्
चतुर्दशसहस्रं च मात्स्यमाद्यं प्रकीर्त्तितम् ।
तथा ग्रहसहस्रन्तु मार्कण्डेयं महद्भुतम् ॥ ३ ॥
चतुर्दशसहस्राणि तथा पञ्च शतानि च ।
भविष्यं परिसंख्यातं मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥४॥
अष्टादश सहस्रं वै पुण्यं भागवतं किल ।
तथा चायुतसंख्याकं पुराणं ब्राह्मसंज्ञकम्॥५॥
द्वादशैव सहस्राणि ब्रह्माण्डं च शताधिकम् ।
तथाष्टादशसाहस्रं ब्रह्मवैवर्त्तमेव च ॥ ६ ॥
अयुतं वामनाख्यं च वायव्यं षट् शतानि च ।
चतुर्विंशतिसंख्यातं सहस्राणि तु शौनक ॥ ७॥
त्रयोविंशतिसाहस्रं वैष्णवं परमाद्भुतम् ।
चतुर्विंशतिसाहस्रं वाराहं परमाद्भुतम् ॥ ८॥

षोडशैव सहस्राणि पुराणं चाग्निसंज्ञितम् ।
चतुर्विंशतिसाहस्रं नारदं परमं मतम् ॥ ९ ॥
पञ्चपञ्चाशत्सहस्रं पाद्माख्यं विपुलं मतम् ।
एकादश सहस्राणि लिङ्गाख्यं चातिविस्तृतम् १०
एकोनविंशत्साहस्रं गारुडं हरिभाषितम् ।
सप्तादशसहस्रं च पुराणं कूर्मभाषितम् ॥११॥
एकाशीतिसहस्राणि स्कन्दाख्यं परमाद्भुतम् ।
पुराणाख्या च संख्या च विस्तरेण मयानघाः
तथैवोपपुराणानि शृण्वन्तु ऋषिसत्तमाः ।
सनत्कुमरं प्रथमं नारसिंहं ततः परम् ॥ १३ ॥
नारदीयं शिवं चैवं दौर्वाससमनुत्तमम् ।
कपिलं मानवं चैव तथा चौशनसं स्मृतम् १४
वारुणं कालिकाख्यं च साम्बं नन्दिकृतंशुभम्।
सौरं पाराशरप्रोक्तमादित्यं चातिविस्तरम् १५

माहेश्वरं भागवतं वासिष्ठं च सविस्तरम् ।
एतान्युपपुराणानि कथितानि महात्मभिः १६

देवीभा० के टीकाकार अपनी भूमिका में मुद्गल पुराण का प्रमाण देते हैं । यथा-मुद्गल पुराणे-

ब्राह्मं च वैष्णवं पाद्मं शैवं भागवतं तथा ।
भविष्यं ब्रह्मवैवर्तं मार्कण्डेयं च वामनम् ॥
आग्नेयं वायवं मात्स्यमित्यादि ॥

जब कि मूल देवीभा० में पुराण उपपुराण दोनों ही गिना दिये और उन दोनों समुदायों में भी मुद्गलपुराण का नाम नहीं आया, फिर आश्चर्य है कि इसी के टीकाकार भूमिका में मुद्गलपुराण का प्रमाण दें । अहो बुद्धि? और एक अद्भुत बात-श्री वेङ्कटेश्वर समाचार बम्बई ने सब का बेझड़ करलिया, जिनको देवीभागवत में उपपुराणों में गिना ऐ उन में ही से भागवत १ नारदीय २ शिव ३ कालिका ४ आदित्य ५ को पुराणों में गिन कर विज्ञापन छाप दिया ! कहिये पाठक ! यह धोका दई नहीं तो क्या है ? इन्ही के प्रेस में देवीभा० भी छपी है, इन्हीं

के प्रेम में पं० ज्वालाप्रसाद जी दयानन्दतिमिर भास्कर के कर्त्ता है, इन्हीं पं० जी ने श्री भागवत का टीका बना कर इन्हीं के प्रेस में छपाया है। वाहरे! धन! तुझे धन्य है? देवीभा० मूल श्लोक का अर्थः-

नकारादि २ दो, भकारादि दो, ब्राऽऽदि तीन, वादि चार, अकारादि १ नकारादि १ पकारादि १ लिङ्गारादि १ गकारादि १ कू आदि १ स्कू आदि १ इतने पुराण पृथक् २ हैं, जिन में-

१ मत्स्य १४०००	११ वाराह २४०००
२ मार्कण्डेय ९०००	१२ अग्नि १६०००
३ भविष्य १४५००	१३ नारद २४०००
४ भागवत १८०००	१४ पद्म ५५०००
५ ब्राह्म १००००	१५ लिङ्ग ११०००
६ ब्रह्माण्ड १२१००	१६ गरुड १९०००
७ ब्रह्मवैवर्त्त १८०००	१७ कूर्म १७०००
८ वामन १००००	१८ स्कन्द ८१०००
९ वायव्य २४६००	———
१० विष्णु २३०००	योग ३९९७००

उपपुराण

१ सनत्कुमार	१० कालिका
२ नृसिंह	११ साम्ब
३ नारदीय	१२ नन्दी
४ शिव	१३ सौर
५ दुर्वासा	१४ पाराशर
६ कपिल	१५ आदित्य
७ मानव	१६ महेश्वर
८ उशना	१७ भागवत
९ वरुण	१८ वसिष्ठ

देवीभागवत में ब्राह्म १ वायव्य २ पाद्म ३ देवीभागवत ४ को पुराणों में लिखा है। और अग्नि पुराण को १६००० माना है। श्रीमद्भा० में १५४०० माना है। इस से सिद्ध है कि देवीभागवत पीछे बना है, उस समय ६०० श्लोक और बढ़ गये थे। और भी बहुत छपता है सो पाठक स्वयं जान लें॥ देवीभा० भूमिका पृ० १ में—

हेमाद्रौ दानप्रस्तावे कूर्मपुराणे अष्टादश पुराणान्युक्त्वा—अन्यान्युपपुराणानि

मुनिभिः कथितानि तु। आद्यं सनत्कुमारोक्तं नारसिंहमतः परम्। इत्यादि। पराशरोक्तं प्रवरं तथा भागवताह्वयम् ॥ इति ॥

और भी पुराण मुनियों के कहे हैं, पहिला सनत्कुमारोक्त उस से आगे नृसिंह इत्यादि पराशरोक्त और भागवत ॥

तथा गारुडे तत्त्वरहस्ये द्वितीयांशे धर्मकाण्डे प्रथमाध्याये–

प्रथम से महापुराणों का सात्त्विकादि भेद से विभाग कह कर लघु पुराणों का सात्त्विकादि भेद से विभाग-दर्शन परक ग्रन्थ में भी कहा है:–

पुराणं भागवतं दौर्गं नन्दिप्रोक्तं तथैव च ॥
पाशुपत्यं रैणुकं च भैरवं च तथैव च ॥

भागवत, दुर्गा का पुराण, और नन्दी का कहा, पाशुपत, रैणुक और भैरव। तथा इस से पूर्व भी:–

विष्णुधर्मोत्तरे चैव तत्र भागवतं तथा ॥ इति ॥

किसी पुस्तक में "तन्त्रं भागवतं तथा" ऐसा भी पाठ है।
तथा पाद्मे शकुनपरीक्षायाम्–

ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च मार्त्तण्डं नारदेरितम्।
इत्यादि ॥

तथैव गदितं रामपुराणं कापिलं तथा।
वाराहं ब्रह्मवैवर्त्तं शकुनेषु प्रशस्यते ॥
शैवं भागवतं दौर्गं भविष्योत्तरमेव च।२। इति

तथा पाद्मे भागवतमाहात्म्ये–१९ अ० उपपुराणों में:–

शैवमादिपुराणं च देवीभागवतं तथा।३।इति

तथा मधुसूदन सरस्वतीकृत सर्वशास्त्रार्थसंग्रह में भी उपपुराणों में भागवत को गिना है। नागोजी भट्टादि निबन्धकारों ने भी धर्मशास्त्रग्रन्थों में यही कहा है। ब्राह्म, वैष्णव, मार्कण्ड, नारद, रामपुराण, कपिलपुराण, वाराहपुराण, ब्रह्मवैवर्त, यह शकुनों में श्रेष्ठ हैं, शैव, दुर्गाभागवत, भविष्योत्तर भी ॥ २ ॥ आदिपुराण, शैव और देवीभागवत ॥ ३ ॥

अब हम जताते हैं कि किन २ पुराणों ने देवीभागवत को महापुराण माना है और किस २ ने वैष्णव भागवत को। देवीभागवत भूमिका पृ० २ पं० ५

शैव और मत्स्य पुराण देवीभागवत को महापुराण कहते हैं। शिव पुराण उत्तरखण्ड मध्यमेश्वर के माहात्म्य में शिव जी से व्यास ने वर पाय १८ महापुराण कहे और उन के योगरूढ नाम कहे हैं। जैसा कि–

यत्र वक्ता स्वयं तण्डे ब्रह्मा साक्षाच्चतुर्मुखः।
तस्माद् ब्राह्मं समाख्यातं पुराणं प्रथमं मुने॥
(तण्डे इति मुनिसम्बोधनम्) पद्मकल्पस्य माहात्म्यं यत्र तस्मादुदाहृतम्। तस्मात्पाद्मं समाख्यातं पुरणं च द्वितीयकम्॥ पराशर कृतं यत्तु पुराणं विष्णुबोधकम्। तदेव व्यास कथितं पुत्रपित्रोरभेदतः। यत्र पूर्वोत्तरे खण्डे शिवस्य चरितं बहु। शैवमेतत्पुराणं हि पुराणज्ञा वन्दति च॥ भगवत्याश्च दुर्गाया-

श्चरितं यत्र विद्यते । तत्तु भागवतं प्रोक्तं नतु देवीपुराणकम् ॥ नारदोक्तं पुराणं तु नारदीयं प्रचक्षते । यत्र वक्ताऽभवत्तण्डे मार्कण्डेयो महामुनिः ॥ मार्कण्डेयपुराणं हि तदाख्यातं च सप्तमम् । अग्नियोगाच्चदाग्नेयं भविष्योक्तैर्भविष्यकम् ॥ विवर्त्तनाद्ब्रह्मणस्तु ब्रह्मवैवर्त्तमुच्यते । लिङ्गस्य चरितोक्तत्वात्पुराणं लिङ्गमुच्यते । वराहस्य च वाराहं पुराणं द्वादशं मुने ॥ यत्र स्कन्दः स्वयं श्रोता वक्ता साक्षान्महेश्वरः । तत्तु स्कान्दं समाख्यातं वामनस्य तु वामनम् ॥ कौर्मं कूर्मस्य चरितं मात्स्यं मत्स्यस्य कीर्त्तितम् ॥ गरुडस्तु स्वयं वक्ता यत्तद्गारुडसंज्ञकम् । ब्रह्माण्डचरितोक्तत्वाद्ब्रह्माण्डं परिकीर्त्तितम् ॥ इति ॥

अर्थ–हे तण्डि ! जहां साक्षात् ब्रह्मा चतुर्मुख वक्ता है वह प्रथम ब्रह्म पुराण है १। पाद्मकल्प का माहात्म्य कहा इस लिये दूसरा पद्मपुराण है २। पराशरकृत विष्णु-बोधक पिता पुत्र के अभेद से व्यासकथित तीसरा विष्णु पुराण है ३। जिस में पूर्वोत्तर खण्डों में शिव की कथा है वह शिवपुराण है ॥ ४ ॥ भगवती दुर्गा का जहां चरित्र वर्णित है वह भागवत है, देवीपुराण नहीं ॥५॥ नारदोक्त होने से नारदीयपुराण कहाता है। हे तण्डि! जहां मार्कण्डेय महामुनि वक्ता है वह मार्कण्डेय पुराण है ॥ अग्नि के योग से अग्निपुराण और भविष्य होने से भविष्य पुराण ॥ ब्रह्मा के विवर्त्तन से ब्रह्मवैवर्त्त और लिङ्ग के चरित्र होने से लिङ्गपुराण ॥ वराह की कथा से वाराह और जहां स्कन्द श्रोता और वक्ता महेश्वर, वह स्कान्द। वामन की कथा से वामन पु० ॥ कूर्मचरित्र से कौर्म ॥ मत्स्य कथा से मात्स्य ॥ जहां गरुड वक्ता है, वह गारुड *

* गरुड़पुराण का प्रेतकल्प तो हिन्दुओं के घर २ व्याप रहा है। जब किसी धनी वृद्ध की मृत्यु हो जाती है तभी पण्डित बांचते हैं। उस में तो गरुड़ वक्ता नहीं है, श्रोता है और श्रीकृष्ण देव वक्ता हैं। जहां चाहो देखलो और पुराणों में भी ऐसी ही गड़बड़ है ॥

ब्रह्माण्ड का चरित्र होने से ब्रह्माण्ड पुराण कहाता है ॥

नारदादि पुराणों के अनुसार विष्णुभागवत ही महापुराणों में है तो यदि यहां भी यही अर्थ किया जावे कि विष्णुभागवत के दशमस्कन्ध में देवी का चरित्र वर्णित है इस कारण वहां भी उसी का बोध किया जावे सो नहीं क्योंकि मुख्यता दुर्गा नाम से और विशेष वर्णन भी नहीं है ॥

आदित्य पुराण के रक्तासुरवधप्रस्ताव में—

या जघ्ने महिषं दैत्यं क्रूरं वृत्रासुरं तथा ।
साद्य रक्तासुरं हत्वा स्वाराज्यं ते प्रदास्यति ॥ इति ॥

जिस ने क्रूर वृत्रासुर और महिषासुर को मारा है वह आज रक्तासुर को मार स्वतन्त्र राज्य तुझे देगी ॥ १ ॥ वृत्रासुर का वध किसी भी पुराण में देवी द्वारा नहीं माना, इन्द्र द्वारा ही सब पुराण कहते हैं । परन्तु देवी भागवत में देवी द्वारा माना है और उस की साक्षी आदित्यपुराण देता है । इस से सिद्ध हुवा कि यह देवी भागवत को ही मानता है ॥ और भी—

शैवमादिपुराणं च देवीभागवतं तथा ।
नवरात्रे तु देवेशि दौर्गं भागवतं पठेत् ।
जपेत् सप्तशतीं चण्डीं नियमेन समाहितः ॥
(दुर्गातरङ्गिणी)

हे पार्वती ! आदिपुराण, शिव और देवीभागवत नवरात्र में पढ़े और सप्तशती चण्डी को नियमपूर्वक एकाग्र हो जपे ॥ १ ॥

देवीभागवतं नित्यं पठेद्भक्त्या समाहितः ।
नवरात्रे विशेषेण श्रीदेवीप्रीतये मुदा ॥ १ ॥
(महेशठक्कुरकृतदुर्गाप्रदीपे)

देवीभागवत नवरात्रों में देवी की प्रसन्नतार्थ नित्य पढ़े ॥ १ ॥

हेमाद्रि कालिका पुराणे–

यदिदं कालिकाख्यं तन्मूलं भागवतं स्मृतम् ।

इस से भी देवीभा० ही सिद्ध होता है क्योंकि महा-पुराणों ही के उपपुराण होते हैं । जैसा कि:–

अष्टादशभ्यस्तु पृथक् पुराणं यत्प्रदिश्यते ।
विजानीध्वं द्विजश्रेष्ठास्तथा तेभ्यो विनिर्गताः

इति । मत्स्यपु० १८ हों पुराणों से पृथक् जो पुराण दीखते हैं वे इन ही से निकले जानो । पुराणदानप्रस्तावे–

ददाति सूर्यभक्ताय यस्तु भागवतं द्विजाः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वव्याधिविवर्जितः ॥
जीवेद्वर्षशतं साग्रमन्ते वैवस्वतं पदम् ॥

यहां यदि विष्णुभागवत का तात्पर्य होता तो वैकुण्ठ जाना कहते । और भीः–

यत्राधिकृत्य गायत्रीं वर्ण्यते धर्मविस्तरः ।
वृत्रासुरवधोपेतं तद्भागवतमिष्यते॥ मत्स्यपु०

जहां गायत्री से आरम्भ कर धर्म का विस्तार से वर्णन हो और वृत्रासुर के वध की कथा से युक्त हो वह भागवत है ॥ १ ॥

अष्टादश पुराणानि कृत्वा सत्यवतीसुतः ।
भारताख्यानमखिलं चक्रे तदुपबृंहणम्॥१॥

यह मत्स्य पुराण में कहा है कि १८ पुराणों को बना कर व्यासजी ने महाभारत बनाया। और श्रीमद्भागवत में यह लिखा है कि भारत बनाकर भी व्यासजी प्रसन्न न हुवे तब भागवत बनाया ॥ १ ॥ इस से सिद्ध होता है कि १८ पुराण कोई अन्य बन चुके थे यह भागवत १९ वीं है ॥

देवीभागवत के भी तृतीय स्कन्ध में लिखा है कि:-

वेदशाखाः पुराणानि वेदान्तं भारतं तथा ।
कृत्वा संमोहसंमूढोऽभवं राजन्मनस्यपि ॥ १ ॥

अर्थात् वेदों की शाखा और पुराण तथा वेदान्तसूत्र और भारत बनाकर भी मैं व्यास मोहमूढ होगया तब देवीभागवत बनाई। और श्रीमद्भागवत के माहात्म्य पद्मपुराण में जब कि श्रीमद्भागवत के श्रोताओं की गणना की है तब लिखा है कि-

वेदान्तानि च वेदाश्च मन्त्राश्च तन्त्राणि संहिताः ।
दश सप्त पुराणानि षट्शास्त्राणि समाययुः ॥ १ ॥

अर्थ-वेदान्त, वेद, मन्त्र, तन्त्र, संहिता, १७ पुराण, शास्त्र, सब भागवत सुनने आये ॥ १ ॥

इस से श्रीमद्भागवत १८ वीं सिद्ध की है। और भी-

दशसप्त पुराणानि कृत्वा सत्यवतीसुतः।
लाप्नवान् मनसा तोषं भारतेनापि भामिनि!
चक्कार संहितामेतां श्रीमद्भागवतीं पराम्॥
(पाद्मे)

और तमाशा

मार्कण्डेय पुराण में लिखा है कि व्यास के मुख से भारत सुनकर क्रोष्टुकि मार्कण्डेय के पास आया और भारत में जो उसे सन्देह हो गये थे वे पूंछे, तब मार्कण्डेय ने मार्कण्डेयपुराण सुनाया॥

मार्कण्डेयपुराणे-

तदिदं भारताख्यानं बहूर्थं श्रुतिविस्तरम्।
तत्त्वतो ज्ञातुकामोऽहं भगवन्तमुपस्थितः॥ १॥

इस से १६ ही पुराण भारत से पूर्व थे क्योंकि श्रीमद्भागवत में मार्कण्डेय को माना है। और भी पद्मपुराण में लिखा है:-

वैष्णवं नारदीयं च तथा भागवतं शुभम् ।
गारुडं च तथा पाद्मं वाराहं शुभदर्शने ।
सात्त्विकानि पुराणानि विज्ञेयानि शुभानि वै।

अर्थ-विष्णु, नारद, भागवत, गरुड, पद्म, यह पांच पुराण सात्विक हैं। इस से भी विष्णुपरक भागवत ही १८ पुराणों में आती है। कूर्मपुराण का भी यही मत है॥

स्कन्दपुराण के प्रभास खण्ड में भी लिखा है कि:-

चतुर्भिर्भगवान् विष्णुर्द्वाभ्यां ब्रह्मा तथा रविः।
अष्टादशपुराणेषु शेषेषु भगवान्भवः ॥ १ ॥

अर्थ-चार पुराणों से विष्णु का वर्णन किया है, २ से ब्रह्मा और सूर्य का, शेष सब में शिव का वर्णन है॥१॥

स्कन्द पुराण की सौर संहिता में:-

कथ्यते दशभिर्विप्राः पुराणैः परमेश्वरः ।
चतुर्भिर्भगवान् विष्णुर्द्वाभ्यां ब्रह्मा प्रकीर्त्तितः।
एकेनाग्निस्तथैकेन भगवांश्चण्डभास्करः ॥ १ ॥

दश पुराणों से परमेश्वर (शिव), चार से विष्णु, दो से ब्रह्मा, एक से अग्नि और एक से सूर्य कहा है। इस में देवी कालिका का नाम भी नहीं ॥

देवीभागवत की टीकाकार भूमिका के चौथे पृष्ठ में लिखते हैं कि नारदीयादि पुराणों में विष्णुभागवत को महापुराण माना है, यह बहुत प्रसिद्ध ही है, देवीभागवत को उपपुराण माना है। इस लिये वह वचन हमने नहीं लिखे हैं। शैव मात्स्य आदि पुराण देवीभागवत को महापुराण कहते हैं ॥

देवीयामल तन्त्र में लिखा है कि:-

श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं वेदसंमतम् ।
पारीक्षितायोपदिष्टं सत्यवत्यङ्गजन्मना ॥१॥
यत्र देव्यवताराश्च बहवः प्रतिपादिताः ।

श्रीमद्भागवत नामक पुराण वेद से सम्मत परीक्षित के पुत्र (जनमेजय) को व्यास जी ने उपदेश किया ॥१॥ जिस में देवी के बहुत अवतार प्रतिपादन किये हैं ॥

तथा सौभाग्यकल्पलता में संहारभैरवतन्त्र का यह निम्नलिखित वचन उद्धृत किया है:-

इदं रहस्यं चरितं राधोपासनमुत्तमम् ।
व्यासाय मम भक्ताय प्रोक्तं पूर्वं मयाद्रिजे १
मत्तो रहस्यं ज्ञात्वैव राधामाहात्म्यमुत्तमम् ।
एतस्य विस्तरं चक्रे श्रीमद्भागवते तथा ॥२॥
नारदे ब्रह्मवैवर्त्ते लोकानां हितकाम्यया ॥

अर्थ-शिव कहते हैं कि हे पार्वति ! यह राधा की उपासना उत्तम गुप्त चरित्र अपने भक्त व्यास को पहले मैंने कहा था, मुझ से गुप्त भेद जानकर ही उत्तम राधा का माहात्म्य विस्तार से श्रीमद्भागवत में बनाया है । और नारदपुराण तथा ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में भी लोकहित की कामना से कहा है ॥

पुराणलक्षणम् यथा अमरकोशे प्रथमकाण्डे-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।
वंश्यानुचरितं चेति पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ १ ॥

श्रीमद्भागवत स्कं० १ अ० ४ में-

सूत उवाच–

द्वापरे समनुप्राप्ते तृतीये युगपर्यये ।
जातः पराशराद्योगी वासव्यां कलया हरेः॥१४
स कदाचित्सरस्वत्या उपस्पृश्य जलं शुचि ।
विविक्तदेश आसीन उदिते रविमण्डले ॥१५॥
परावरज्ञः स ऋषिः कालेनाव्यक्तरंहसा ।
युगधर्मव्यतिकरं प्राप्तं भुवि युगे युगे ॥१६॥
भौतिकानां च भावानां शक्तिह्रासं च तत्कृतम्
अश्रद्दधानान्निस्सत्त्वान्दुर्मेधान्ह्रसितायुषः
दुर्भगांश्च जनान्वीक्ष्य मुनिर्दिव्येन चक्षुषा ।
सर्ववर्णाश्रमाणां यद्दध्यौ हितममोघदृक् ॥१८॥
चातुर्होत्रं कर्म शुद्धं प्रजानां वीक्ष्य वैदिकम् ।
व्यदधाद्यज्ञसंतत्यै वेदमेकं चतुर्विधम् ॥१९॥
ऋग्यजुःसामाथर्वाख्या वेदाश्चत्वार उद्धृताः।
इतिहासपुराणं च पञ्चमो वेद उच्यते ॥ २० ॥

तत्रर्ग्वेदधरः पैलः सामगो जैमिनिः कविः।
वैशंपायन एवैको निष्णातो यजुषामुत ॥२१॥
अथर्वाङ्गिरसामासीत्सुमन्तुर्दारुणो मुनिः ।
इतिहासपुराणानां पिता मे रोमहर्षणः २२
तएत ऋषयो वेदं स्वं स्वं व्यस्यन्ननेकधा ।
शिष्यैःप्रशिष्यैस्तच्छिष्यैर्वेदास्तेशाखिनोभवन्
तएव वेदा दुर्मेधैर्धार्यन्ते पुरुषैर्यथा ।
एवं चकार भगवान्व्यासः कृपणवत्सलः ॥२४॥
स्त्रीशूद्रद्विजबन्धूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा॥२४॥
कर्मश्रेयसि मूढानां श्रेयएवं भवेदिह ॥
इति भारतमाख्यानं कृपया मुनिना कृतम् २५
एवं प्रवृत्तस्य सदा भूतानां श्रेयसि द्विजाः ।
सर्वात्मकेनापि यदा नाऽतुष्यद्धृदयं ततः २६
नातिप्रसीद्धृदयः सरस्वत्यास्तटे शुचौ ।
वितर्कयन्विविक्तस्थ इदं प्रोवाच धर्मवित्२७

धृतव्रतेनापि मया छन्दांसि गुरवोऽग्नयः
मानिता निर्व्यलीकेन गृहीतं चानुशासनम् २८
भारतव्यपदेशेन ह्याम्नायार्थश्च दर्शितः ।
दृश्यते यत्र धर्मादिःस्त्रीशूद्रादिभिरप्युत ॥२९॥

इत्यादि बहुत पाठ है ॥

सूत जी शौनकादिकों से कहते हैं कि जब तीसरा युग द्वापर आया, तब पराशर जी से वासवी स्त्री में भगवान् की कला से व्यास योगी उत्पन्न हुवे ॥ १४ ॥ वे व्यास जी किसी समय शुद्ध सरस्वती नदी में आचमन कर एकान्त देश में बैठे थे, सूर्य उदय हुआ ॥१५॥ युगधर्म को जानने वाले परावरज्ञ ऋषि कलियुग को जान गये ॥ १६ ॥ और युगप्रभाव से भौतिक भावों की शक्ति का ह्रास देख तथा खोटी बुद्धि अश्रद्धावान् थोड़ी आयु ॥१७॥ कुरूप मनुष्यों को दिव्यदृष्टि से देखा । सब वर्णाश्रमों के धर्म का ध्यान किया ॥ १८ ॥ प्रजाओं के चातुर्होत्र शुद्ध वैदिक कर्म समझ कर यज्ञार्थ एक वेद को चार प्रकार से किया ॥ १९ ॥ ऋग्, यजुः, साम, अथर्वनामक चार वेद उद्धृत किये । इतिहास पुराण पांचवां वेद कहाता है

॥ २० ॥ उन में ऋग्वेद का धारण पैल ने किया, साम का जैमिनि कवि ने, एक वैशम्पायन यजुः का ज्ञाता हुआ ॥ २१ ॥ सुमन्तु दारुण मुनि अथर्व का ज्ञाता था। इतिहास पुराणों का ज्ञाता मेरा पिता रोमहर्षण हुआ ॥२२॥ ये सब ऋषि अपने २ वेद को अनेक प्रकार से शिष्य प्रशिष्यों और उन के शिष्यों को पढ़ाते रहे। इस लिये उन २ शाखा के नाम से प्रसिद्ध हुवे ॥ २३ ॥ वे वेद जिस से छोटी बुद्धि वाले भी धारण कर सकें, व्यास जी ने ऐसे सरल प्रकार से इतिहास पुराण बनाया ॥२४॥ स्त्री, शूद्र, द्विजबन्धुओं को वेदत्रयी नहीं सुनना, मूर्खों को सुख कल्याण हो, इस लिये कृपापूर्वक महाभारत बनाया ॥ २५॥ इस प्रकार सब की भलाई में प्रवृत्त हुवे व्यास जी का हृदय भारत बनाकर भी सन्तोष को प्राप्त न हुवा ॥२६॥ सरस्वती के शुद्ध तट पर इन का हृदय अतिप्रसन्न न हुवा तब एकान्त में बैठे यह बोले ॥ २७ ॥ कि मैंने व्रत धारण कर चार वेद पढ़े, गुरुसेवा और अग्निहोत्र किया, गुरुओं की आज्ञा भी निर्भ्रान्त हो मानी ॥ २८ ॥ भारत के व्यपदेश से वेद का अर्थ भी दिखा दिया, जिस में स्त्री शूद्रादि भी धर्म को जान सकें ॥ २९ ॥

फ़ैसला

हमारी सम्मति में दोनों भागवतों में श्रीमद्भागवत ही पूर्व का बना है, उस में निम्नलिखित प्रमाण हैं ॥

१ उस समय में उपपुराण १८ नहीं थे, अतः उस ने इन की गणना नहीं लिखी। देवीभागवत में १८ पुराण १८ उपपुराणों के नाम लिखे हैं ॥

२ यदि देवीभागवत से पूर्व विष्णुभागवत न होता तो उस को उपपुराणों में क्यों गिनाते ॥

३ देवीभागवत में भी चारों पाद का पूर्व श्लोक किसी २ पुस्तक में पाया जाता है इसी लिये यह भी गायत्रीछन्द से आरम्भ नहीं हुआ। और ऐसा भी सम्भव है कि गायत्री का अर्थ सूर्यस्तुति समझ कर श्रीमद्भागवत ने "सत्यं परं धीमहि" यह वाक्य लिखा हो और तदनुकूल ही अन्य पुराणों में "यत्राधिकृत्य गा०" यह उक्षणवाक्य लिखा हो परन्तु देवीभागवत ने अपने को ही भागवत बनाने के लिये इसी प्रकार का छन्द प्रथम लिखा हो ॥

४ भूमिका के अद्भुत से पदों से खेंचा तानी भान होती है।

५ देवीभागवत ने अग्निपुराण को १६००० माना है और विष्णुभागवत ने १५४००, इस से भी यही ज्ञात है कि पीछे से ६०० श्लोक जब बढ़ चुके तब देवीभागवत बना ॥ इति ॥

पं० छुट्टनलाल स्वामी के स्वामी औषधालय परीक्षितगढ़–मेरठ की दश वर्ष की परीक्षित दवायें–

१ महायोगराज गुग्गुल वटी–दाम १) १०८ गोली। यह प्रसिद्ध महौषध है। १३ प्रकार के महारोगों का नाश करती है। हर गृहस्थ में रहनी चाहिये।

२ सुरमा ममीरी ३) तोला।

३ सुधाञ्जन सुरमा ॥) तोला, यह नेत्र के समस्त रोग हरता है। इस के प्रमाणपत्र भी हमारे पास बहुत हैं।

४ ज्वरघ्न भस्म–एक तोला, १) १०० खुराक सब प्रकार के ज्वरों पर।

५ अतीसारारि चूर्ण, अतीसार पर परमोत्तम चूर्ण ॥)

६ दद्रुघ्न वटी–दाद की महोत्तम दवा ३२ गोली।) की

७ अर्कप्रसूतारि–प्रसूत पर प्रसिद्ध दवा १) का ५॥ सेर।

८ खांसी की गोली–८ घड़ी में आराम लिखा है १०८ का १)

९ लवणभास्कर चूर्ण अत्युत्तम ॥) का एक पाव।

१० दन्तमञ्जन ॥) डिठवी।

११ अण्डकोशपीड़ा की दवा ॥)

१२ प्रमेह की बढ़िया दवा ॥) की २१ खुराक।